Introduction of Philosophy

"दृश्यते अनेन इति दर्शनम्" अर्थात् सत् एवं असत् पदार्थों का ज्ञान ही दर्शन है। दर्शन उस विद्या का नाम है, जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है। दर्शनशास्त्र यथार्थ ज्ञान (सत्य ज्ञान) की खोज (परख) के लिए एक दृष्टिकोण है, जो परम सत्य और उसके सिद्धांतों, उसके कारणों की विवेचना करता है। दर्शन एक ऐसा विचार है, जो जीवन के रहस्यों को जानने का प्रयत्न करता है।

हमारे भारतीय दर्शन में परम् सत्ता के साथ साक्षात्कार करने का दूसरा नाम ही दर्शन है। दर्शनशास्त्र उस व्यापक दृष्टिकोण का नाम है, जो मानव जाति के विभिन्न समस्याओं का तर्कपूर्ण ढंग से विवेचन करता है। हम यहाँ कह सकते हैं, कि किसी भी वस्तु तथा कार्य का तर्कपूर्ण ढंग से विवेचन करने वाली कला ही दर्शन है। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के रहस्य को जानने के लिए किया गया प्रयास ही दर्शनशास्त्र है। दर्शनशास्त्र हमें मानव-जीवन से जुड़ी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देता है, जैसे :- दर्शन क्या है, हमारे जीवन में इसका क्या महत्व है, मानव जीवन का मूल लक्ष्य (उद्देश्य) क्या है, ईश्वर क्या है, यह जीव और जगत से कैसे

Scanned by CamScanner

भिन्न है। परमात्मा तथा प्रकृति के बीच कौन-सा रहस्य है, इस जगत का मूल कारण क्या है? इत्यादि इन सारे प्रश्नों का उत्तर हमें दर्शनशास्त्र के माध्यम से ही मिलता है।

दर्शन क्या है :—

दर्शन हमें चीजों को देखने और उन्हें समझने का नजरिया प्रदान करता है, इसलिए दर्शन हमारे जीवन में बहुत ही उपयोगी है। दर्शन शब्द संस्कृत के "दृश्" धातु से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है ~~देखना~~ "देखना"। अर्थात् जो देखने योग्य है, वही दर्शन है। या जिसके द्वारा देखा जाय, वही दर्शन है। लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य यह बात है, कि देखने का मतलब आंखों से देखना नहीं है, बल्कि तार्किक एवं अंतर्दृष्टि से देखना है। व्यापक अर्थ में "दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन" अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति (अनुभव) हो वही दर्शन है। अब प्रश्न यहाँ यह उठता है, कि किसके द्वारा देखा जाय? इसका एकमात्र उत्तर है — दर्शनशास्त्र द्वारा। क्योंकि दर्शनशास्त्र में अनेक मतों (विचारों) पर प्रमाणों द्वारा चर्चा किया गया है। जिसकी पुष्टि आप व्यवहारिक जीवन में भी कर सकते है।

दर्शन अंग्रेजी भाषा के शब्द "फिलोसफी"

(philosophy) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों "फिलोस" (Philos) तथा "सोफिया" (Sophea) से हुई है। यहाँ "Philos" का अर्थ — प्रेम तथा अनुराग है, और "Sophea" का अर्थ — ज्ञान (Wisdom) है। इस प्रकार दर्शन का शाब्दिक अर्थ ज्ञान से प्रेम है। इस दृष्टि से सत्य की खोज करने तथा उसके वास्तविक स्वरूप को प्रयोग करने वाले व्यक्ति को 'दार्शनिक' की संज्ञा दी जाती है। "Plato" ने अपनी पुस्तक "Republic" में लिखा है, कि — "जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई-नई बातों को जानने के लिए सदा प्रयत्न करता है, तथा जो कभी संतुष्ट नहीं होता है, उसे दार्शनिक कहा जाता है।" (He who has a taste for every sort of knowledge and who is curious to learn and is never satisfied may be justify termed philosopher.)

डॉ राधाकृष्णन के अनुसार — "दर्शन वास्तविकता के स्वरूप की नई संगत खोज है।" (Philosophy is a Logical enquiry in to the nature of Reality).

आस्तिक दर्शन एवं नास्तिक दर्शन :

हमें भारतीय दर्शन को दो सम्प्रदायों

Scanned by CamScanner

मे बाँटा गया है। — आस्तिक सम्प्रदाय एवं नास्तिक सम्प्रदाय। इसे आस्तिक दर्शन एवं नास्तिक दर्शन के भी नाम से जाना जाता है। भारतीय दार्शनिक परम्परा के अनुसार उन दर्शनो को आस्तिक दर्शन कहा गया है, जो वेद मे निहित बातों पर विश्वास रखते है। तथा नास्तिक दर्शन उन दर्शनो को कहा गया है, जो वेद में निहित बातो पर विश्वास नहीं रखते है। साधारण तौर पर हम कह सकते है, कि जो दर्शन ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखता है, उसे नास्तिक दर्शन एवं जो दर्शन ईश्वर की सत्ता मे विश्वास रखता है, उसे आस्तिक दर्शन की श्रेणी मे रखा गया है।

आस्तिक दर्शन के छः मुख्य विभाग है। —

- न्याय दर्शन
- वैशेषिक दर्शन
- सांख्य दर्शन
- योग दर्शन
- मीमांसा दर्शन
- वेदान्त दर्शन

छः आस्तिक दर्शन होने के कारण इसे "षड्दर्शन" भी कहा जाता है।

भारत में कुछ ऐसे व्यक्तियों ने भी जन्म लिया जो वैदिक परम्परा के बंधन को नहीं

मानते थे। अर्थात् जो वेदों को प्रमाणित ग्रंथ के रूप में नहीं मानते थे, वे नास्तिक कहलाते। हमारे भारतीय दर्शन में तीन दर्शनों को नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखा गया है:-

- चार्वाक दर्शन
- जैन दर्शन
- बौद्ध दर्शन

अर्थात कुल मिलाकर हमारे भारतीय दर्शन को नौ भागों में विभक्त किया गया है:- जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

- **न्याय - दर्शन :-**

भारत के छः दर्शनों में न्याय दर्शन को पहले स्थान पर रखा गया है। इसके प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं, जिनका न्यायसूत्र इस दर्शन का सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध ग्रंथ है।

जिन साधनों से हमें ज्ञेय तत्वों का ज्ञान प्राप्त होता है, उन्हीं साधनों को "न्याय" की संज्ञा दी गई है। नीयते विवक्षितार्थः अनेन इति न्यायः। "जिस साधन के द्वारा हम अपने ज्ञेय तत्व के पास पहुँच जाते हैं, उसे जान पाते हैं, वही साधन न्याय है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि जिसकी सहायता से किसी सिद्धान्त पर पहुँचा जा सके, उसे "न्याय" कहते हैं। प्रमाणों के आधार पर किसी निर्णय पर पहुँचना ही न्याय दर्शन का मुख्य सिद्धान्त है।

Scanned by CamScanner

Page No: ______
Date: __/__/____

वैशेषिक – दर्शन

भारतीय दर्शनों में वैशेषिक-दर्शन को आस्तिक सम्प्रदाय के दूसरे दर्शन के रूप में माना गया है। इसके मूल प्रवर्तक महर्षि कणाद है। यह दर्शन न्याय दर्शन से बहुत ही मतो में समानता रखता है। लेकिन वास्तव में यह एक स्वतंत्र विज्ञानवादी दर्शन है। प्रत्येक नित्य द्रव्य को परस्पर पृथक करने के लिए तथा प्रत्येक तत्व के वास्तविक स्वरूप को अलग-अलग जानने के लिए इन्होंने एक "विशेष" नाम का पदार्थ माना, इसलिए इनके "दर्शन" को "वैशेषिक-दर्शन" कहा गया। वैशेषिक दर्शन के अनुसार समस्त जगत को "भाव और अभाव" इन दो विभागों में विभाजित किया गया है। इसमें "भाव" के छः विभाग है — द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष तथा समवाय (इसकी चर्चा हम वैशेषिक के सात पदार्थों की चर्चा में करेंगे)। अभाव: अपने-आप में अकेला है, अर्थात् किसी वस्तु का न होना, उस वस्तु का अभाव है।

सांख्य – दर्शन

भारतीय-दर्शन के छः दर्शनों में "सांख्य-दर्शन" भी एक दर्शन है। जो प्राचीनकाल से ही अत्यंत लोकप्रिय हुआ था। यह हमारे "वेदान्त दर्शन" के भाग अद्वैत-वेदान्त (जिसके प्रणेता शंकराचार्य है) से सर्वथा विपरीत मान्यताएँ रखने वाला

दर्शन है। इसके प्रणेता महर्षि "कपिल" हैं। "सांख्य" का शाब्दिक अर्थ है — संख्या। इसकी सबसे प्रमुख सिद्धान्त है :— इस सृष्टि की रचना प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से हुई है। यहाँ प्रकृति जड़ (पंचमहाभूतों से बनी) है। तथा पुरुष (जीवात्मा) चेतन है।

• योग – दर्शन

हमारे भारतीय दर्शन में योग को चौथे "दर्शन" के रूप में माना गया है। यह दर्शन सांख्य – दर्शन के "पूरक दर्शन" के नाम से प्रसिद्ध है। इसके प्रणेता "पतञ्जलि" मुनि को माना गया है, जो जिन्होने "योगसूत्र" की रचना की। प्रकृति, पुरुष के स्वरूप के साथ ईश्वर के अस्तित्व को मिलाकर मनुष्य जीवन की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक उन्नति के लिए "दर्शन" का एक बड़ा व्यावहारिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप "योग दर्शन" में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जिस पर चलकर मानव जाति अपने परम लक्ष्य यानि "मोक्ष" की प्राप्ति कर सकता है। "योग – दर्शन" को "सेश्वर – सांख्य" भी कहा जाता है, क्योंकि ये सृष्टि के अस्तित्व के लिए 25 तत्वों के अलावे एक 26वाँ तत्व भी जोड़ता है, जो है — "ईश्वर"। साथ – ही – साथ सांख्य – दर्शन की तरह "योग – दर्शन" को भी द्वैतवादी दर्शन कहा गया है।

Scanned by CamScanner

मीमांसा - दर्शन

मीमांसा दर्शन हिन्दुओं के छः दर्शनों में से एक है। "जैमिनि" मुनि द्वारा रचित सूत्र होने से मीमांसा को "जैमिनीय धर्ममीमांसा" कहा जाता है। यह धर्म पर आधारित दर्शन है, इसलिए इसे धर्ममीमांसा भी कहा गया है। इस शास्त्र को "पूर्व-मीमांसा" और वेदान्त-दर्शन को "उत्तरमीमांसा" भी कहा जाता है। "पूर्वमीमांसा" में "धर्म" का विचार है, और "उत्तरमीमांसा" में "ब्रह्म" का।

वेदान्त - दर्शन

वेदान्त-दर्शन को भारतीय दर्शन के ~~आस्तिक~~ आस्तिक-सम्प्रदाय में अंतिम स्थान पर रखा गया है। उपनिषद् वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है, इसलिए इसे "वेदान्त" कहा गया है। वेदान्त का शाब्दिक अर्थ होता है —— वेदों का अंत अथवा वेदों का सार।

वेद-आदि में विधिपूर्वक अध्ययन, मनन तथा उपासना आदि के अन्त में जो तत्व जाना जाये, उस तत्व का विशेष रूप से जहाँ निरूपण किया गया हो, उस शास्त्र को "वेदान्त" कहा जाता है। वेदान्त-दर्शन" को ही हम "उत्तरमीमांसा" के नाम से जानते हैं, जिसमें ~~ब्रह्म~~ "ब्रह्म" के स्वरूप का निरूपण किया गया है। "वेदान्त-दर्शन" को भी पाँच सम्प्रदायों में बाँटा गया है। —— • शंकर का अद्वैतवेदान्त, रामानुज का विशिष्टाद्वैतवाद, मध्वाचार्य का द्वैतवाद,

Scanned by CamScanner

निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद तथा वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैतवाद।

(इनकी चर्चा हम वेदान्त दर्शन की विस्तृत व्याख्या में करेंगे)।

- चार्वाक दर्शन

हमारे भारतीय दर्शन के नास्तिक सम्प्रदायों में पहले स्थान पर "चार्वाक-दर्शन" का नाम आता है। इसे लोकायत दर्शन भी कहा गया है। यह दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हुए के कहता है, कि यह काल्पनिक बात है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है, तथा पारलौकिक सत्ता (जगत से परे सत्ता) में विश्वास नहीं रखता है) इसे पूर्णतः "भौतिकवादी-दर्शन" माना गया है, क्योंकि इसका मूल मंत्र है। — "खाओ पियो और मौज करो") इसके प्रवर्तक 'बृहस्पति' को माना गया है ~~और~~ जिसे "चाणक्य" ने अपने अर्थशास्त्र ग्रंथ में अर्थशास्त्र का एक प्रधान आचार्य माना है।

चार्वाक का नाम सुनते ही हमें 'यावत जीवेत सुखं जीवेत, ऋणं कृत्वा, घृतं पिबेत") (जब तक जीओ सुख से जीओ, उधार लो और घी पीओ। की याद आती है।

चार्वाक "शब्द की उत्पत्ति — 'चारु + वाक्' से हुई है। अर्थात् चबा-चबा के मीठी बोली बोलने वाला। "सर्वदर्शनसंग्रह" में "चार्वाक-दर्शन"

Scanned by CamScanner

का सारा विचार निहित है, जिसके अनुसार सुख ही जीवन का परम लक्ष्य है। इसलिए इसे "सुखवादी" दर्शन भी कहा गया है। चार्वाक ईश्वर और परलोक को नहीं मानते हैं। अतः जो कुछ है, वो आज है, इसलिए अधिकतम सुख की प्राप्ति में लगे रहो। इस दर्शन का जिक्र "महाभारत" में भी मिलता है।

• बौद्ध - दर्शन

"बौद्ध - दर्शन" को भी नास्तिक सम्प्रदाय के अन्तर्गत रखा गया है, क्योंकि यह भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करता है। "बौद्ध - दर्शन" से अभिप्राय उस दर्शन से है, जो "भगवान बुद्ध" के निर्वाण के बाद "बौद्ध - धर्म" के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया और पूरे "एशिया" में उसका प्रचार - प्रसार किया गया। दुःख से मुक्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति बौद्ध-दर्शन का मूल सिद्धान्त है। कर्म, ध्यान एवं प्रज्ञा इसके मूल साधन रहे हैं। महर्षि "गौतम बुद्ध" को इस दर्शन का प्रणेता माना जाता है। जिसने अपने पहले उपदेश जो "सारनाथ" में दिये थे, उसमे उन्होंने चार ~~आर्य सत्यों~~ आर्यसत्यों की चर्चा की :—

- सर्वम दुःखम् :- संसार दुःखमय है।
- दुःख समुदाय :- दुःख उत्पन्न होने के कारण है।

- दुःखनिरोध :— दुःख का निवारण संभव है।
- दुःख-निरोधमार्ग :— दुःख निवारण के लिए आठ प्रकार के मार्ग हैं, जिसपर चलकर व्यक्ति संसार के समस्त दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर सकता है।

जिसे 'बौद्ध-दर्शन' में अष्टांगिक-मार्ग के नाम से भी जाना जाता है। अष्टांगिक मार्ग हैं :—

(1) • सम्यक् दृष्टि
(2) • सम्यक् वाक्
(3) • सम्यक् आजीव
(4) • सम्यक् संकल्प
(5) • सम्यक् स्मृति
(6) • सम्यक् सुमति
(7) • सम्यक् व्यायाम
(8) • सम्यक् समाधि

- जैन-दर्शन

"जैन-दर्शन" को भी नास्तिक-संप्रदाय के रूप में हमारे भारतीय दर्शन में रखा गया है। जिसके प्रणेता "महावीर स्वामी" हैं, जिन्होंने "जैन-दर्शन" की स्थापना की। जैन दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। "जैन" शब्द की उत्पत्ति 'जिन' से मानी गई है, जिसका अर्थ होता है — "विजेता", अर्थात्

Scanned by CamScanner

वह व्यक्ति जिसने इच्छाओं (कामनाओं) एवं मन पर विजय प्राप्त करके हमेशा के लिए संसार के आवागमन से मुक्ति प्राप्त कर ली, वह स्वयं भगवान बन जाता है। इसमें वेद की प्रामाणिकता को कर्मकाण्ड की अधिकता और जड़ता के कारण मिला बताया गया। जैन-दर्शन के अनुसार जीव और कर्मों का यह संबंध अनादि काल से है। "जैन-धर्म" में चौबीस तीर्थंकर (महापुरुष, जैनों के ईश्वर) हुए जिनमें प्रथम ऋषभदेव तथा अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर महावीर महावीर हुए। इनके कुछ तीर्थंकरों के नाम "ऋग्वेद" में भी मिलते हैं, जिससे इसकी प्राचीनता प्रमाणित होती है।

"भारतीय-दर्शन" का हमारे जीवन में क्या महत्व है, एवं इसकी विशेषताओं की चर्चा हम आगे करेंगे।

Scanned by CamScanner